Vol. 4, Issue: 6, August: 2016
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्मसिद्धि एवं समायोजन का विश्लेषण

डॉ. तिर्मल सिंह
एसो. प्रोफसर, बी.एड. विभाग, श्री जे. एन. पी. जी. कालेज, लखनऊ

प्रस्तावना

शिक्षा वह है जो मानव को पशु–तुल्य से मनुष्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य पहने जाने वाले परिधान के साथ–साथ अपने उठने–बैठने, चलने–फिरने और सामाजिक रीति–रिवाजों को सीखता है। शिक्षा प्राप्ति के उपरांत ही मानव के सभ्य एवं सुसंस्कृत जीवन की कल्पना की जा सकती है। शिक्षा जहां एक ओर बालकों का सर्वांगीण विकास करती है, उन्हें चरित्रवान, बुद्धिमान बनाती है, वहीं दूसरी ओर यह समाज के विकास हेतु एक अनिवार्य एवं शक्तिशाली साधन है। बालक की व्यक्तिगत प्रगति, उसका मानसिक, शारीरिक तथा भावनात्मक विकास शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त किये जा सकते हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। प्राचीन काल में मानव समाज शिक्षा मूल्य जैसे शब्दों से वह अनजान थे कि कैसे एकीकरण की भावना का विकास हुआ समाज की आवश्यकताओं को महसूस किया एवं मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान दिया शिक्षा के पाठ्यक्रम का निर्माण किया तथा मूल्यों को ध्यान में रखकर उसे सर्वोच्च स्थान दिया। वर्तमान शिक्षा प्रणाली सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान पर भी बल देती है, किंतु आज के समय में व्यवहारिक ज्ञान पर ध्यान ना के बराबर दिया जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरुप बालकों को किताबी ज्ञान तो प्राप्त हो गया हैं लेकिन इसको जीवन में किस तरह उपयोग में लाना है उसमें सक्षम नहीं हो पा रहे है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उल्लेख है कि शिक्षा द्वारा आर्थिक सामाजिक स्थिति का विकास करना है जिससे बालकों में नैतिक सामाजिक एवम आध्यात्मिक मूल्य का विकास हो शिक्षा के बिना विकास की गति धीमी हो जाती है। विश्व में जहां विकास में प्रगति हो रही है वहां शिक्षा और शिक्षण के बिना छात्रों का विकास संभव नहीं हो पाता है। शिक्षा छात्र की समाज की आवश्यक्ताओं की पूर्ति कर वह उनको समायोजित करने में सक्षम बनाता है। जो छात्र अपने को समायोजित नहीं कर पाते वह कुंठा, हीनता एवं अन्य दुर्बलताओं का शिकार हो जाते हैं। वर्तमान समय में व्यक्ति अपनी आवश्यक्ताओं की पूर्ति में लगा हुआ है। भौतिक आवश्यकताएं इतनी होती जा रही है कि सामाजिक मूल्य मानकों को ध्यान नहीं देता है। आत्म सम्मान की संतुष्ट के आभाव में वह लाचार, हतोत्साहित एवं कमजोर महसूस करता है। आत्मसिद्धि वह आवश्यकता है जिसमें अपनी योग्यता और नाम के अनुरूप अपने आप को विकसित करके विकास करता है तथा समायोजित होता है। मानव व्यवहार का नियंत्रण करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। **मैस्लो** ने अपने ध्यान द्वारा स्पष्ट किया कि स्थायित्व उसके व्यवहार के साथ अंतर्क्रिया स्थापित

कर लेती है जीवन की विभिन्न परिस्थितियों तथा जटिलताओं से संघर्ष करते हुए समस्याओं पर विजय प्राप्त करने का गुण है। प्रश्न यह उठता है कि आत्मसिद्धि क्या है समायोजन क्या है तथा इन दोनों में क्या संबंध हैं।

फील्ड के अनुसार व्यक्ति जिस रूप में अपने आप को देखता है वही उसका आत्मा है इनके अनुसार व्यक्ति के रूप में वह है जैसा व्यक्ति को लोग देखते हैं **ड्राइवर** के अनुसार आत्म शब्द का प्रयोग अहम अर्थ के रूप में किया जाता है। **आइजनेल** के अनुसार आत्म का अर्थ मूल रूप से उस प्रत्यक्षीकरण से है जो विषय अपने ही संबंध में करता है। व्यक्ति के स्वयं के प्रति अभिवृतियों के तीन पहलू हैं ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा व्यवहारपरक। ज्ञानात्मक पहलू का अर्थ आत्मा की अंतर्वस्तु से है भावनात्मक पहलू का अर्थ और भावनाओं से है जो व्यक्ति अपने स्वयं के प्रति रखता है जबकि व्यवहारात्मक पहलू का अर्थ उसके क्रियाकलापों से है। जहां तक आत्मसिद्धि क्या प्रश्न है वहां **मैस्लो** ने अपने आवश्यकता के पदानुक्रम में आत्म सिद्धि को उच्चतम स्तर पर स्थान दिया है उन्होंने यह भी बताया आत्म सिद्धि की आवश्यकताएं तभी उत्पन्न होती है जब व्यक्ति आत्मसम्मान की आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है उन्होंने मानव अभिप्रेरकों को प्राथमिकता के आधार पर निम्न प्रकार से व्यवस्थित किया।

1–दैहिक या शारीरिक आवश्यकताएं
2–सुरक्षा की आवश्यकता
3–संबद्धता और स्नेह की आवश्यकताएं
4–सम्मान की आवश्यकताए
5–आत्म शुद्धि की आवश्यकताएं

मैस्लो ने कहा कि आत्मसिद्धि व्यक्ति के उच्चतम स्तर की प्रेरणा को दर्शाती है उसके निम्नलिखित गुण हैं

1–वास्तविकता का सही आकलन,
2–स्वयं के महत्व का आकलन
3–सरलता स्वाभाविकता तथा सहजता समस्या केंद्रित,
4–एकांत की आवश्यकता
5–वातावरण की स्वतंत्रता,
7–प्रशंसा की निरंतरता,
8–शीर्ष अनुभूतियां
9–सामाजिक रुचि,
10–घनिष्ठ संबंध,
11–प्रजातांत्रिक मूल्य
12–सृजनात्मकता,
13–संस्कृति के प्रति अनुरूपता

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

शैक्षिक महत्व की दृष्टि से आत्मसिद्धि मनुष्य के पूर्ण विकास का मार्ग करता है। यह सिद्धांत बालकों की आयु एवं स्तर के अनुरूप सभी की आवश्यकताओ को निर्धारित करने एवं निर्णय लेने में सहायता करता है। यह बालकों के व्यक्तित्व विकास के लिए समुचित अभिप्रेरण की व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करता है। जहां तक समायोजन का प्रश्न है यह आवश्यक्ताओं या इच्छाओं की पूर्ति के लिए परिस्थितियों तथा व्यवहार के मध्य संतुलन है। प्रत्येक व्यक्ति के सम्मुख समायोजन की समस्या होती है। इसका समाधान वह अपनी क्षमता के अनुरूप करता है तथा जब वह समायोजन करने में असफल रहता है तब कुंठा का शिकार हो जाता है।

Vol. 4, Issue: 6, August: 2016
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

वैयिक्तिक भिन्नता के कारण समायोजन की आवश्यकता अनुभव की जाती है। समायोजन का अर्थ अनुकूलन समंजन सामंजस्य या समन्वय यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन करके वातावरण से सामंजस्य स्थापित करता है। **गेट्स** के अनुसार निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। समायोजन की निम्न विशेषताएं हैं।

1–समायोजन बहुआयामी है।

2–समायोजन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।

3–समायोजन परिस्थितियों के अनुरूप हमारे सोचने की शक्ति और जीने के तरीकों में आवश्यक परिवर्तन करती है।

4–समायोजन हमारी आवश्यकता एवं क्षमताओं के मध्य संतुलन बनाती है।

5–समायोजन खुशी और संतोष प्रदान करती है।

सम्बन्धित साहित्य

1–पांडे,मनोज (2015) ने बीएड छात्रों के मध्य आत्मसिद्धि के स्तर पर अध्ययन किया न्यादर्श के रूप में शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय से कुल 200 बीएड छात्रों का चयन किया जिसमें 100 छात्र तथा 100 छात्राएं थी। निष्कर्ष के रूप में यह ज्ञात हुआ छात्र तथा छात्राओं के मध्य आत्मसिद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसी प्रकार संकाय की दृष्टि से विज्ञान तथा कला के विद्यार्थियों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2–त्रिपाठी, लोकपति (2014) ने माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में संवेगात्मक बुद्धि और आत्मसिद्धि का व्यक्तित्व के संदर्भ में अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में उन्होंने कुल 400 विद्यार्थियों को चुना इसमें 200 छात्र तथा 200 छात्राएं थी। निष्कर्ष के रूप में यह पाया कि छात्र तथा छात्राओं के संवेगात्मक बुद्धि और आत्म सिद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

3–सिंह, जितेंद्र (2014) ने शारीरिक विकलांगता एवं सामान्य विद्यार्थियों के मध्य समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में बरेली जिले के 500 विद्यार्थियों का चयन किया। जिसमें 250 विद्यार्थी शारीरिक विकलांगता वाले तथा 250 सामान्य थे। निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया की सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा शारीरिक विकलांगता विद्यार्थी कम समायोजन कर पाते हैं।

4–राव सुनील (2015) ने माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण किशोरों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन किया न्यादर्श के रूप में कानपुर नगर एवं देहात के 600 छात्रों का चयन किया गया जिसमें तीन शहरी क्षेत्र के तथा 300 छात्र ग्रामीण क्षेत्र के थे। निष्कर्ष में यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का समायोजन शहरी छात्रों की तुलना में कम है।

समस्या कथन

“ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्मसिद्धि एवं समायोजन का विश्लेषण ”

प्रमुख पदों का परिभाषीकरण

आत्मसिद्धिः– मैस्लो उसे इस प्रकार से परिभाषित किया है– एक व्यक्ति जो हो सकता है उसे वह होना चाहिए इसी आवश्यकता को ही आत्मसिद्धि कहेंगे। **मैस्लो** ने आत्मसिद्धि को स्वयं में पूर्ण होने की एक इच्छा बताया है।

समायोजनः– बोरिंग के अनुसार समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यक्ताओं एवं इन आवश्यक्ताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

व्यक्ति किसी भी कार्य को कोई उद्देश्य लेकर पूरा करता है वह पूर्व दर्शित लक्ष्य है। बिना उद्देश्य के हम अपने जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते हैं। इस शोधपत्र का प्रमुख उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्मसिद्धि एवं समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है।

1–उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्मसिद्धि पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

2–उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1–उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्मसिद्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जाता है।

2–उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जाता है।

शून्य परिकल्पना

$H0_1$ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के आत्मसिद्धि प्राप्तांको के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

$H0_2$ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं के समायोजन प्राप्तांको के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया जायेगा। सर्वेक्षण विधि का सम्बन्ध वर्तमान परिस्थितियों के सम्बन्धों में प्रचलित व्यवहारों, विश्वासों, दृष्टिकोणों या अभिवृत्तियों, जो कि स्थापित हैं इन सबसे होता है, किन्तु परिस्थितिवश जब किसी बड़ी जनसंख्या की समस्त इकाईयों का चयन नहीं हो पाता है तब केवल एक उपयुक्त नमूने का सर्वेक्षण किया जाता है तो इसे सर्वेक्षण विधि कहते हैं। अतः इस विधि की विशेषता को ध्यान में रखते हुए वर्तमान कार्य को सम्पन्न किया जायेगा।

जनसंख्या एवं न्यादर्ष

प्रत्येक शोध कार्य हेतु जनसंख्या का निर्धारण अति आवश्यक है। इसी जनसंख्या से चयनित न्यादर्श के आाधार पर सम्बन्धित प्रदत्तों का संकलन किया जाता है व महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जाते है। प्रस्तुत शोध पत्र में लखनऊ महानगर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप लखनऊ जनपद के 10

Vol. 4, Issue: 6, August: 2016
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन लाटरी विधि द्वारा किया गया है जिनमें प्रत्येक विद्यालय से 10 विद्यार्थियों अर्थात 5 छात्र तथा 5 छात्राओं का चयन किया गया है इस प्रकार कुल 100 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्ता द्वारा निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा ।

1–आत्म सिद्धि मापनी के रूप में शर्मा द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है कुल 75 एकांश है।

2–समायोजन मापनी के रूप में सिन्हा एवं सिंह द्वारा निर्मित शाला विद्यार्थी हेतु समायोजन मापनी का किया गया है मापनी में कुल 60 एकांश है।

प्रदत्तों का विश्लेषण

H01 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के आत्मसिद्धि प्राप्तांको के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका–1

आत्मसिद्धि	**कुल संख्या**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**'t` मान**	**सार्थकता**
छात्र	50	58.4	2.96	14.84	0.01 स्तर पर सार्थक
छात्राएं	50	49.7	2.89		

H02 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं के समायोजन प्राप्तांको के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका–2

समायोजन	**कुल संख्या**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**'t` मान**	**सार्थकता**
छात्र	50	196	2.89	10.18	0.01 स्तर पर सार्थक
छात्राएं	50	190.9	2.04		

परिणाम

उपरोक्त तालिका –1 से स्पष्ट है कि छात्र–छात्राओं के आत्मसिद्धि प्राप्तांक का मान **14.84** है । यह मान 0.05 विश्वसनीयता स्तर के लिए आवश्यक मान **1.99** से अधिक है तथा 0.01 विश्वसनीयता स्तर के लिए आवश्यक मान **2.63** से भी अधिक है। जोकि दोनों ही स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना *उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं के समायोजन प्राप्तांको के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है* को अस्वीकृत किया जाता है तथा शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

उपरोक्त तालिका–2 से स्पष्ट है की छात्र–छात्राओं के मध्य समायोजन प्राप्तांकों का मान **10.18** है। यह मान 0.05 विश्वसनीयता स्तर के लिए आवश्यक मान **1.99** से अधिक है तथा 0.01 विश्वसनीयता स्तर के लिए आवश्यक मान **2.63** से भी अधिक है। जोकि दोनों ही स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना *उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र तथा छात्राओं के समायोजन प्राप्तांको के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है* को अस्वीकृत किया जाता है तथा शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

1–छात्र–छात्राओं के आत्म सिद्धि प्राप्तांकों के मध्यमानों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि तथा छात्राओं के आत्मसिद्धि प्राप्तांकों में अंतर है। **पांडे,मनोज (2015)** ने निष्कर्ष के रूप में यह ज्ञात हुआ छात्र तथा छात्राओं के मध्य आत्मसिद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। छात्राओं के आत्मसिद्धि प्राप्तांकों में अंतर का मुख्य कारण यह है कि छात्र अपने अंदर की क्षमता योग्यता तथा विकास के प्रति जागरुक रहते हैं तथा माता–पिता भी इसमें सहायता करते हैं वह छात्रों को स्वतंत्रता एवं रुचियों के अनुसार व्यवसाय खोजने के लिए प्रेरित करते हैं जबकि आज भी इस देश में छात्राओं की स्थिति छात्रों की अपेक्षा ठीक नहीं है।

2–छात्र तथा छात्राओं के समायोजन प्राप्तांकों के बीच सार्थक अंतर पाया गया क्योंकि यह देखा गया है कि छात्रों के संवेग अस्थिर तथा आक्रामक होने के साथ ही विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन करने की क्षमता रखते हैं। **राव सुनील (2015) ने** निष्कर्ष में यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का समायोजन शहरी छात्रों की तुलना में कम है। यही कारण है कि छात्रों का संवेगात्मक शैक्षिक तथा कुल समायोजन अपेक्षा अधिक होता है तथा वे अंतर्द्वंद कुंठा एवं पारिवारिक तनाव से दूर रहते हैं आज का समाज परिवर्तनशील है माता पिता अपने बच्चों में बिना किसी भेदभाव के पालन पोषण करने की कोशिश करते हैं जिससे वह अपने आप को विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में समायोजित करने का प्रयास कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अस्थाना एवं अग्रवाल. (2004). मनोविज्ञान और शिक्षा, द्वितीय संस्करण. आगराः विनोद प्रकाशन.

भटनागर, ए . बी., भटनागर, डा. मीनाक्षी एवं भटनागर, डॉ. अनुराग. (2011). शैक्षिक एवं मानसिक मापन. पूर्णतः संशोधित संस्करण. मेरठः आर0 लाल बुक डिपो.

भटनागर, ए . बी. एवं भटनागर, डॉ0 मीनाक्षी. (2007). शिक्षा अनुसंधान. द्वितीय संस्करण. मेरठः लायल बुक डिपो.

चौहान, एस. एस..(2002). शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में नवाचार. द्वितीय संस्करण. नोयडाः नोएडा विकास पब्लिशिंग हाउस

गुप्ता, एस. पी. (2007). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. तृतीय संस्करण. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.

गुप्ता, एस. पी. (2005). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.

गुप्ता, एस. पी. (2005). साँख्यिकीय विधियाँ. संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.

अहमद, एच. (2012). 10+2 स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन के सन्दर्भ में उनके सतत् आन्तरिक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन. अप्रकाशित पी–एच.डी. थीसिस, शिक्षा संकाय, अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ, उत्तर प्रदेश